श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी वेरावल

मानननीय कुलपति प्रो. सुकान्त कुमार सेनापति जी की प्रेरणा से आयोज्यमान

अन्ताराष्ट्रीय संगोष्ठी

विषयः- भारतीयज्ञानपरम्पराया अवधारणा पारम्परिकस्रोतांसि च

भारतीय ज्ञानपरम्परा की अवधारणा तथा पारम्परिक स्रोत

(Concept and Sources of Indian Knowledge Tradition)

दिनाङ्क- ११- १२ फरवरी २०२६

डॉ. नरेन्द्र कुमार पण्ड्या
मुख्य संयोजक
प्राचार्य, श्री सोमनाथ संस्कृतयुनिवर्सिटी
संचालित संस्कृत कॉलेज, वेरावल

प्रो. विनोद कुमार झा
मुख्य संयोजक
निदेशक, अनुस्नातक विभाग
श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल

संयोजकगण

डॉ. रामकुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
साहित्य विभाग

डॉ. राहुल कुमार झा
असिस्टेंट प्रोफेसर
वेद विभाग

डॉ. नित्यानन्द ओझा
अध्यक्ष
ज्योतिष विभाग

डॉ. डी.एम.मोकरिया
अध्यक्ष
साहित्य विभाग

नई शिक्षा नीति- २०२० के अन्तर्गत हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा से अवगत होने एवं ज्ञान के विभिन्न स्रोतों का विशेष अध्ययन तथा शोधकार्य पर विशेष बल दिया गया है, क्योंकि भूमि पर स्थित मनुष्य के साथ ही सभी जीव-जन्तुओं एवं वनस्पतियों के कार्य व्यवहार से सम्बन्धित प्रायः सभी तथ्य बृहद अथवा बीज रूप में हमारे वेदों, वेदांगों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतिग्रंथों, धर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों, दर्शनशास्त्र, रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों तथा अनेक आचार्यों द्वारा रचित विभिन्न काव्य- शास्त्रों में प्राप्त होते हैं।

वैदिक काल से ही हमारी ज्ञान परम्परा अत्यन्त समृद्धशाली रही है। हमारे शास्त्रों में मनुष्य के साथ ही समस्त प्राणियों की जीवनशैली और जीवनोपयोगी गतिविधियों के परस्पर प्रभावों तथा मनुष्य के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक जीवन का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

ज्ञातव्य है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चतुर्विध पुरुषार्थों की सिद्धि में साधक एवं बाधक सभी तथ्यों का सूक्ष्म चिंतन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हमारे वेद शास्त्रों में दृष्टिगोचर होता है।

शास्त्र निहित ज्ञान राशियों पर प्रकाश डालने एवं समायानुसार परिवर्तित इस आधुनिक युग में उन तथ्यों पर शोध कार्य तथा समाजोपयोगी बनाने एवं समाज के सभी वर्गों को अपनी ज्ञान परम्परा से अवगत कराने हेतु चिंतन- मनन आवश्यक है, क्योंकि भौतिक वातावरण में परिवर्तन के साथ ही प्राप्त तथ्यों को जीवनोपयोगी बनाने के लिए समय और संसाधन के अनुरूप विविध ज्ञान एवं कौशल की प्रस्तुति अपेक्षित होती है। अतः इन विभिन्न तथ्यों एवं नियमों से परिचित होकर इनके प्रयोग द्वारा हम वर्तमान समय में भी इस अविच्छिन्न ज्ञान परम्परा में निर्दिष्ट कार्यों का निर्वहन कर अपनी भारतीय ज्ञान परम्परा को विश्व पटल पर सर्वोच्च रूप से स्थापित कर सकते हैं।

ध्यातव्य है कि विविध शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन एवं भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रचार प्रसार तथा जन मानस को वेद-शास्त्रों में निहित ज्ञान से अवगत कराने हेतु विविध कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं आदि का आयोजन श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल द्वारा किया जाता रहा है। इसी क्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली के पारम्परिक स्रोतों पर गहन चिंतन एवं विमर्श के लिये एक द्विदिवसीय अन्ताराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक- ११-१२ फरवरी २०२६ तक किया जा रहा है।

उक्त विषय पर विशेष विमर्श तथा वाद-संवाद द्वारा अपनी सनातन संस्कृति से अवगत होकर लाभान्वित होने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित है।

संगोष्ठी से सम्बन्धित ध्यातव्य बिन्दुएँ –

- **संगोष्ठी** का आयोजन श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल गुजरात में किया जायेगा।
- प्रतिभागी ऑनलाइन पञ्जीकरण कराकर ही संगोष्ठी में प्रतिभाग ग्रहण कर सकेंगे।
- इस कार्यक्रम में भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्येता एवं जिज्ञासुगण तथा शोधछात्र भागग्रहण कर सकेंगे।
- संगोष्ठी में प्रतिभाग ग्रहण करने के लिए पञ्जीकरण शुल्क रू. १००० तथा शोध छात्रों के लिए रू. ५०० निर्धारित किया गया है।
- शोधपत्र की भाषा संस्कृत/ हिन्दी/गुजराती/अंग्रेजी होनी चाहिए।
- शोधसारांश/शोधपत्र MS Word में टाईप किया गया (संस्कृत/हिन्दी/गुजराती में Arial Unicode font size-14, अंग्रजी में Times new roman size- 12) प्रेषित करें।
- शोधपत्रवाचन के पश्चात शोधपत्र की प्रति आयोजकों को देना अनिवार्य होगा।
- प्रस्तुत शोधपत्रों में से गुणवत्ता के आधार पर चयनसमिति द्वारा चयनितशोधपत्रों का प्रकाशन किया जायेगा
- प्रतिभागियों के लिए आवास एवं भोजन व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी, किन्तु यात्रा भत्ता संस्था की ओर से देय नही होगा।
- शोधपत्र की सारांशिका दिनांक ०४ फरवरी २०२६ तक sssu.academic@gmail.com इस ईमेल आईडी पर प्रेषित करना अनिवार्य है।
- पञ्जीकरण की अंतिम तिथि ३०-०१-२०२६ निर्धारित की गयी है।
- अंतिम दिनांक के पश्चात् पंजीकरण स्वीकार नही किया जायेगा।
- पञ्जीकरण-लिंक- https://forms.gle/qF6paVR3gBnjvhMK6
- आवेदनशुल्क-लिंक- https://easypay.axis.bank.in/easyPay/makePayment?mid=MzYwMDc%3D
- श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल गुजरात
- वेबसाइट- https://sssu.ac.in/ **(पञ्जीकरण लिंक वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।)**
- संगोष्ठी में मुख्य विषय के साथ ही अधोलिखित विषयों में भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित शोधपत्र प्रस्तुत किया जा सकता है -

क्रम सं.	विषय
1.	वेद- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
2.	उपनिषद/ ब्राह्मणग्रंथ/वेदभाष्य आदि
3.	वेदांग - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष के मुख्य ग्रंथ
4.	पुराण, स्मृतिग्रंथ, धर्मसूत्र एवं गृह्यसूत्र
5.	संस्कृत साहित्य में प्राप्त रामायण, महाभारत आदि सभी महाकाव्य

6.	**संस्कृत साहित्य में प्राप्त काव्य, गद्य, नाटक आदि**
7.	**भारतीय दर्शन**
8.	**वास्तुशास्त्र**
9.	**पर्यावरण एवं कृषि**
10.	**योग एवं आयुर्वेद**
11.	**भारतीय चिकित्सा शास्त्र एवं माडर्न चिकित्सा**
12.	**चतुःषष्ठी कलाएं**
13.	**प्रबन्धन शास्त्र**
14.	**आधुनिक विधिशास्त्र**
15.	**विमानशास्त्र**

- ध्यातव्य है कि उपरोक्त विषयों के अतिरिक्त संगोष्ठी के मुख्य विषय से सम्बन्धित अन्य विषयों में भी भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित शोधपत्र प्रेषित किया जा सकता है।

सम्बधित जानकारी हेतु कार्यक्रम के मुख्य संयोजकों से सम्पर्क कर सकते हैं-

नाम	संस्था	मोबाइल नम्बर
प्रो.विनोद कुमार झा (मुख्य संयोजक)	निदेशक, अनुस्नातक विभाग	9213000594
डॉ. नरेन्द्र कुमार पण्ड्या (मुख्य संयोजक)	प्राचार्य, विश्वविद्यालय संचालित संस्कृत कॉलेज	9213000593
डॉ. डी.एम.मोकरिया	एसोसिएट प्रोफेसर, साहित्यविभाग	9825512756
डॉ. नित्यानन्द ओझा	असिस्टेंट प्रोफेसर, ज्योतिषविभाग	7408049488
डॉ. राहुल कुमार झा	असिस्टेंट प्रोफेसर, वेद विभाग	7383088612
डॉ. रामकुमारी	असिस्टेंट प्रोफेसर, साहित्य विभाग	8817239976

*****